International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2024; 6(1): 33-36
Received: 20-11-2023
Accepted: 26-12-2023

डॉ. शालिनी यादव
राजनीतिशास्त्र विभाग,
राजकीयमहाविद्यालय
सिद्धरावली, गुरुग्राम,
हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. शालिनी यादव
राजनीतिशास्त्र विभाग,
राजकीयमहाविद्यालय
सिद्धरावली, गुरुग्राम,
हरियाणा, भारत

शिक्षा के समकालीन मुद्दे

डॉ. शालिनी यादव

DOI: https://doi.org/10.22271/multi.2024.v6.i1a.366

प्रस्तावना

विद्या एक ऐसा धर्म है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और ना ही कोई छीन सकता है। यह एक एकमात्र साधन है जो बांटने पर कम नहीं होता बल्कि इसके विपरीत बढ़ता ही जाता है। हमने देखा होगा कि हमारे समाज में जो शिक्षित व्यक्ति होते हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग हमारे समाज में उन्हीं की इज्जत करते हैं। शिक्षा समाज में अमीर- गरीब, उच्च -नीच के भेद को मिटा देता है। शिक्षक समाज केसृजन, उत्थान और परिवर्तन का एक माध्यम है।समाजिक उत्थान स्वीकार किया जाता है, समाज में परिवर्तन कब हो सकता है, जब मनुष्य को परिवर्तन की आवश्यकता हो। कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से आवश्यक परिवर्तन ला सकता है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिक का बहुत तेजी से विकास हो रहा है इससे सामाजिक और आर्थिक प्रगति हो रही है। जिसके कारण आय में सुधार, रोजगार के नए अवसर और गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक स्तर पर वर्गीय भेदभाव, लिंग पूर्वाग्रह को भी दूर किया जा सकता है। समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा मिलता है। शिक्षा सामाजिक विकास और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। मानव जीवन में शिक्षा के माध्यम से अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिलता है।

शिक्षा एक सामाजिकरण का भी माध्यम है। शिक्षा के माध्यम से बच्चों और युवाओं में मूल्यों के प्रति संवेदना बढ़ती है और समाज में परिवर्तन लाने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है। समाज में होने वाले विभिन्न परिवर्तन चाहे वह अच्छे हो या बुरे हो शिक्षा उन को प्रभावित करने वाले सदैव एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो व्यक्ति और समाज दोनों में बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन लाता है। व्यक्ति के दृष्टिकोण मैं सकारात्मकपरिवर्तन लाती है। फ्रांसिस जे ब्राउनके अनुसार शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है। सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास के एक एजेंट या उपकरण के रूप में शिक्षा की भूमिका काफी व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। यह एक राष्ट्रीय निर्माण और विकास का एक प्रमुख घटक है समाज में तीर्थ सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका काफी व्यापक देखने को मिली है।

शिक्षा संस्कृति को संरक्षित करती हैंऔर उन तथ्यों का रिकॉर्ड रखती है जिनका प्रयोग आने वाली पीढ़ियों द्वारा किया जाएगा यह सोचने बेहतर निर्णय लेने और अपने दृष्टिकोण में नवीन ताला ने में भी सक्षम बनाती है।

यह समय-समय पर विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों और कारणों और प्रभाव के बारे में जनता को जागरूक करती है। सैमुअल कॉइनिंग निवेदन किया है कि शिक्षा को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा एक समूह की सामाजिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित हो और साथ ही वह प्रक्रिया जिससे बच्चा समाजिक हो सकता है और समूह के व्यवहार के नियमों को सीखता है जिससे वह पैदा हुआ है।

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षा का कार्य

शिक्षा जीवन के आधुनिक तरीके के पक्ष में लोगों के दृष्टिकोण को बदलने में मदद करती है। जिससे कि पूर्वाग्रह अंधविश्वासों और मान्यता जो समाज के लिए नकारात्मकता लाती है से लड़ने में मदद करती है।यह समाज में व्याप्त कमजोरियां अज्ञानता से लोगों को अवगत कराती है। यह लोगों को जीवन के सभी क्षेत्र में प्रगति आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद करती है।

यदि समाज में परिवर्तन लाना है तो शिक्षा सामाजिक परिवर्तन में नेतृत्व प्रदान करती है।लोकतंत्र के अनुकूल सामाजिक परिवर्तन लाना है तो हमें लोगों को व्यापक रूप से साक्षर बनाना होगा और सामाजिक पुनः निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए बुनियादी शिक्षा डिजाइन को महत्व देना होगा।

संस्कृति का संचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में राष्ट्रीय संस्कृति के संचार को आसानी से पहुंचाने के माध्यम के रूप में शिक्षा एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती है। शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो समाज में स्थिरता और निरंतरता प्रदान करती है ।शिक्षा समाज को आवश्यक और वांछनीय सामाजिक सुधारों को अपनाने के लिए भी तैयार करती है। समाज निर्माता निर्देशक और परिवर्तन के स्रोत के रूप में शिक्षा एक महत्वपूर्ण यंत्र के रूप में कार्य करती है।

राष्ट्रीय एकीकरण और राष्ट्रीय विकास शिक्षा के माध्यम से समाज के विभिन्न समूह और वर्गों के बीच जो संघर्ष है उसको समाप्त किया जा सकता है।शिक्षा ही एक माध्यम है जो विभिनता में एकता लाता है स्वतंत्रता सामाजिक न्याय औरसमान अवसर के मूल्यों पर आधारिक सामाजिक व्यवस्थाप्रदान करती है।आर्थिक विकास, तकनीकी विकास और सामाजिक समरसता की स्थापना में शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा सोच, विचारधारा, संस्कृति और अंतर- क्रिया में परिवर्तन को प्रभावित करती है और यही समाज को गतिशील जीवंत और समृद्ध बनाती है।

वर्तमान समय में आर्थिक सामाजिक अन्य क्षेत्रों में ढांचागत और नीतिगत परिवर्तन और प्रगति काफी तेज गति से हुई है फलस्वरूप इस बढ़ते विकास दर ने सभी क्षेत्रों में शिक्षा के म को दर्शाया है। लेकिन इन परिवर्तनों ने हमारी शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कुछ समस्याओं को भी चिन्हित किया है और शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त इन समस्याओं को दूर करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण मांग है।

हाल के वैश्विक अध्ययन जिसमें मूल्यों के PEWरिसर्च सेंटर द्वारा विश्व के 90 से अधिक देशों में स्कूली शिक्षा मांगों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन विश्व में 'धर्म एवं शिक्षा' नाम से किया गया। दुनिया के प्रमुख धर्मों के बीच शैक्षिक प्राप्ति पर केंद्रित है इसमें हिंदुओं में शैक्षिक प्राप्ति का स्तर सबसे कम पाया गया और भारतीय विद्यालय शिक्षण की व्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे निम्न स्थान प्रदान किया गया। पीसा जो कि यूरोप में अपनाए जाने वाला माप मानक है ने भारतीय स्कूलों की गुणवत्ता का अध्ययन किया इसके द्वारा किए गए 110 देशों के अध्ययन में भारत को नीचे से दूसरी रैंक प्रदान की गई है, जो कि भारतीय शिक्षा की निराशाजनक स्थिति को दर्शाता है। वर्ष 2015 के राष्ट्रीय सर्वेक्षण नमूने केपरिणामों में भी माध्यमिक विद्यालयों के गणित विज्ञान और अंग्रेजी को सीखने की क्षमता में गिरावट देखने को मिली है परंतु अनेक अध्ययनों से यह साबित हुआ है कि विश्व में सीखने की दृष्टि से भारतीय बच्चे किसी अन्य देश से आगे हैं उदाहरण स्वरूप अमेरिका में भारतीय अमेरिकी सबसे ज्यादा शिक्षा समुदायों में से एक है।

शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं

पाठ्यक्रम में व्यवहारिकता की कमी, स्कूली स्तर के आंकड़ों की विश्वसनीयतामें कमी, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए किए गए प्रावधानों को नलागू किए जाना, शिक्षा के अधिकार अधिनियम को जमीनी स्तर पर लागू ना किए जाना, शिक्षा संस्थानों की खराब, वैश्वीकरण के प्रदान की गई शिक्षा और उद्योगों के लिए आवश्यक शिक्षा के बीच में अंतर, महंगी उच्च शिक्षा, लैंगिक अंतर-अभिभावकों की बात करें तो वह लड़का लड़कियों में अंतर स्वीकार करते हैं लड़कियों को उच्च शिक्षा देने के पक्ष में नहीं है भारतीय बच्चों के लिए आधारभूत सुविधाओं की कमी,समावेशी शिक्षा का

अभाव।अभिभावक बच्चों की इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छा उन पर ठोकते हैं बच्चों की इच्छा और क्षमता को अनदेखी करना भी एक बड़ी समस्या है शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त इन समस्याओं को दूर करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण मांग है।शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने के लिए निम्न उपाय किए जाने अनिवार्य हैं।

शिक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना, शिक्षा के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, सरकारी खर्चा को बढ़ाना, समावेशी शिक्षा प्रणाली पर जोर देना, गुणवत्ता की शिक्षा को बढ़ावा देना. शिक्षा क्षेत्र में ढांचागत विकास हेतु पीपीपी मॉडल को अपनाना।वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है अब हम बारहवीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से नौकरी के साथ पढ़ाई कर सकते हैं।सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने हेतु पीआर सुब्रमण्यम समिति का गठन किया गया था समिति ने शिक्षा क्षेत्र के लिए नए सिविल सर्विसेज कैडर बनाने की सिफारिश की गई।हाल ही में भारतीय नईशिक्षा नीति को तैयार की है 2030 तक लागू करने की बात कही गई है।इस नई शिक्षा नीती में बुनियादी शिक्षा पर अधिक ज़ोर दिया गया है लागू करने की बात कही गई है।

एक और यदि यह बात सत्य है कि समाज शिक्षा को प्रभावित करता है तो दूसरी बात यह भी सत्य है कि समाज के द्वारा भी शिक्षा प्रभावित होती है। शिक्षा समाज के स्वरूप सुनिश्चित करती है उसकी संस्कृति धार्मिक राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है ।शिक्षा मानव समाज की आधारशिला है शिक्षा के माध्यम से समाज की भौगोलिक स्थिति पर नियंत्रण किया जा सकता है। शिक्षा समाज के स्वरूप में परिवर्तन कर सकती हैं शिक्षा समाज की संस्कृति का संरक्षण कर सकती हैं शिक्षा समाज की धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को नियंत्रित कर सकती हैं। समाज में रहकर नए-नए अनुभव प्राप्त करना समाज की आवश्यकता एवं समस्याओं से परिचित होना इन आवश्यकता की पूर्ति और समस्याओं के हल के लिए विचार करना शिक्षा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है ।सामाजिक क्रांति के लिए शिक्षा मूलभूत आवश्यकता होती है।

शिक्षा को चरित्र और नैतिक विकास का आधार कहा जाता है। शिक्षा के माध्यम से विनम्रता, साहस,सच्चाई, इमानदारी, शिष्टाचार, स्नेह, सेवा, त्याग की भावना अच्छे-बुरे में भेद की शक्ति प्राप्त होती है।जो वास्तव में एक महान और सूक्ष्म रूप से बच्चों में चरित्र का निर्माण करती है। वर्तमान भारतीय शिक्षा में संकट के कारण मूल्यपरक शिक्षा का आभावहै। आज इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि भारत में मूल्यों की शिक्षा एवं शैक्षणिक मूल्यों का पतन हुआ हैहै। मूल्य संबंधी प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण में समस्त जीवन मात्र के कल्याण की कामना निहित होती थीहै। जनसंख्या में वृद्धि जनसंख्या में वृद्धि समस्त समस्याओं का एक प्रमुख कारण है है।शिक्षा का अधिकार उपलब्ध होने के बावजूद 1 से 14 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों को अधिकांश कुपोषण का शिकार है शिक्षा प्राप्त करने वाले आयु वर्ग के बालकों की संख्या इतनी अधिक है कि उनका पालन पोषण ठीक प्रकार से नहीं हो पा रहा है।वहीं दूसरी तरफ उनके लिए पर्याप्त शैक्षणिक सुविधाओं का भी अभाव है।आजकल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं ताकि सभी की उपयुक्त शिक्षा तक पहुंच संभव हो सके। इन सरकारी योजनाओं का प्रचार विज्ञापन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में टीवी और अखबारों के द्वारा पहुंचाया जा रहा है। बावजूद उसके यह प्रयास बहुत ही कम है क्योंकि हमारी जनसंख्या बहुत अधिक।संकुचित दृष्टिकोण का होना वर्तमान भारतीय शिक्षा की स्थिति का एक प्रमुख कारणहै लोगों को अधिकांश अनुशासनहीनता भी वर्तमान शिक्षा की एक बड़ी समस्या है रोजगार पर शिक्षा का ना होना। आज के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा काफी अहम है आजकल में समय शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत सारे तरीके अपनाए जा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। अब हम बारहवीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से नौकरी के साथ पढ़ाई कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी के विकास और करोनामहामारी के इस काल में डिजिटल शिक्षा डिजिटल शिक्षा का अर्थ है शिक्षा में ऐसे उपकरणों और तकनीकों का प्रयोगको शामिल करना यह एक नए और व्यापक तकनीकी क्षेत्र है जो किसी भी छात्र को ज्ञान प्राप्त करने और देश के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है। न केवल भारत के बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल शिक्षा भविष्य a इस रिपोर्ट में उन्होंने गुणवत्तापूर्वक डिजिटल शिक्षा के बारे में बताया और सरकार द्वारा दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षकों विद्वानों और छात्रों को आपस में जोड़ने के लिए दीक्षा मंच स्वयंप्रभा टीवी चैनल ऑनलाइन का

पाठ्यक्रम और नियर शिक्षा वाणी जैसे कई डिजिटल कार्यक्रम कि शुरुआत के बारे में बताया। वर्तमान समय में दूरस्थ शिक्षा की सुविधा के लिए नवीन मोबाइल ऐप और पोर्टल लॉन्च किए जा रहे हैं जैसे उत्तराखंड में संपर्क बैंक ऐप का प्रयोग कर किया जा रहा है जिसके माध्यम से प्राथमिक स्कूल के छात्र ऐनिमेटेड वीडियो ऑडियो वर्कशीट पहेली आदि का उपयोग कर रहे हैं। असम में कक्षा 1 से 6 के लिए इसी प्रकार का मोबाइल एप्लीकेशन एप लॉन्च किया गया। लगभग सभी राज्यों ने इसी तरह के पोर्टल और एप बनाकर छात्रों और शिक्षकों के बीच मे एक कड़ी बनाई ।जहाँ डिजिटल शिक्षा के अनेक फायदे हैं वहीं इसके कुछ कमियां भी हैं डिजिटल शिक्षा पूरी तरह तकनीक पर आधारित है ।कंप्यूटर लैपटॉप मोबाइल और इंटरनेट के अभाव में डिजिटल शिक्षा ग्रहण नहीं की जा सकती ।यह व्यवस्था एक खर्चीली व्यवस्था है ।इसके अलावा शारीरिक और मानसिक रूप से विद्यार्थियों के लिए हानिकारक भी साबित हुई है ।आर्थिक रूप से कमजोर माता पिता अपने बच्चों को इस प्रकार की व्यवस्था उपलब्ध नहीं करा सकते। जिन क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी है वहाँ डिजिटल शिक्षा प्रदान नहीं की जा सकती इसके अलावा जो सबसे गंभीर समस्या सामने आयी है वह है कि बच्चे ना केवल इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि वह कुछ आपत्तिजनकसामग्री तक उनकी पहुँच बन गई है इससे बच्चो का नैतिक पतन हो रहा है। इसके अलावा ऑनलाइन गेमिंग से बच्चे शारीरिक रूप से स्थूल हो रहे हैं और आर्थिक नुकसान भी कर लेते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा बहुत महंगी हो गई है। शिक्षा में अनावश्यक राजनीतिक हस्तक्षेप का होना सांस्कृतिक पिछड़ेपन का होना छात्रों एवं शिक्षकों के पारस्परिक संबंधों का ना होना शिक्षकों की कमी एवं अनुपस्थिति की समस्या शैक्षणिक अवसरों की समानता का ना होना, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ना होना, पाठ्यक्रम की समस्या अवसरों मे असमानता और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है यह एक जीवन के कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने में सहायता करता है पूरी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए गए क्या हम सभी और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति आत्मनिर्भर बनाता है यह जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसर दिलाता है ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वाराबहुत से सहयोग किए जा रहे हैं यह समाज में सभी व्यक्तियों में समानता की भावना लाने के लिए अनिवार्य है देश के विकास और उसकी प्रगति के लिए शिक्षा का चुस्त-दुरुस्त होना अनिवार्य हैं ।

संदर्भ

1. www.historyjournal.net
2. https://www.drishtiias.com/hindi/dailyupdates/dailynews-editorials/problem-of-current-education-system-in-india
3. https://www.hindivibhag.com
4. http://ignited.in/1/a/305394
5. https://hindi.carreerindia.com
6. https://shikshaniti.com